12

शुन:शेपोपाख्यान-1

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति का मूल वेद है। वेद चार हैं। ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद, और अर्थववेद। उन चारों वेदों में भी ऋग्वेद अत्यन्त प्राचीन है। ये सम्पूर्ण ऋग्वेद गद्यमय है। तथा ऋग्वेद में विद्यमान उपाख्यान ऋग्वेद के माहात्म्य को और भी अधिक बढाता है।

शुन:शेपोपाख्यानम् ऋग्वेद का अत्यन्तप्रसिद्ध आख्यान है। शुन:शेपोपाख्यानम् ऋग्वेद के अनेक सूक्तों में विद्यमान है (1/24-25)। इससे ये घटना सत्याश्रित प्रतीत होती है। ऐतरेयब्राह्मण में (7/3) ये आख्यान अतिविस्तार के साथ वर्णित है। इस उपाख्यान के आदि में हरिश्चन्द्र और विश्वामित्र का सम्बन्ध कल्पना करके बढ़ाकर बताया है। वरुण की कृपा से इक्ष्वाकु-राजा हरिश्चन्द्र के गृह में पुत्रोत्पन्न हुआ। वरुण को समर्पण के समय में हरीशचन्द्र का वन में पलायन, हरिश्चन्द्र को जलोदर रोग उत्पन्न होना, मार्ग में अजीगर्त के मध्यम पुत्र शुन:शेप का क्रय करना, देवताओं की कृपा से उसकी मृत्युपाश से मुक्ति और आगे चलकर विश्वामित्र द्वारा उसको दत्तकपुत्र स्वीकार करना आदि घटना का आख्यान अतिप्रसिद्ध है।

ये उपाख्यान बड़ा ही विस्तृत है। यद्यपि एक ही विषय से संबंधित होते हुए भी ये उपाख्यान तीन भागों की कल्पना करके तीन पाठों में वर्णित है।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे-

- शुन:शेपोपाख्यान को जान पाने में;
- शुन:शेपोपाख्यान के तात्पर्य को जान पाने में;
- वैदिक प्रयोग को जान पाने में;

टिप्पणी

- वैदिक और लौकिक प्रयोग में भेद कर पाने में;
- स्वयं ही मन्त्र की व्याख्या को कर पाने में;
- स्वयं ही श्लोकों का अन्वय करने में;
- सूक्त में स्थित व्याकरण को पाने में;
- मन्त्रों के सामान्य अर्थ को जान पाने में;

प्रथमखण्ड

12.1 मूलपाठ

हरिश्चन्द्रः ह वैधन ऐक्ष्वाको राजाऽपुत्र आस तस्य ह शतं जाया बभूवुः तासु पुत्रं न लेभे तस्य ह पर्वतनारदौ गृहे ऊषतुः स ह नारदं पप्रच्छ इति।

यं न्विमं पुत्रमिच्छन्ति ये विजानन्ति ये च न। किं स्वित् पुत्रेण विन्दते तन्म आचक्ष नारदेति।इति।

स एकया पृष्टो दशभिः प्रत्युवाच इति।

ऋणमस्मिन् संनयत्यमृतत्वं च गच्छति। पिता पुत्रस्य जातस्य पश्येच्चेजीवतो मुखम्॥ इति।

यावन्तः पृथिव्यां भोगा यावन्तो जातवेदसि। यावन्तो अप्सु प्राणिनां भूयान् पुत्रे पितुस्ततः॥ इति।

शश्वत् पुत्रेण पितरोऽत्यायन् वहुलं तमः। आत्मा हि जज्ञे आत्मनः स इरावत्यतितारिणी॥ इति।

किं नु मलं किमजिनं किमु श्मश्रुणि किं तपः। पुत्रं ब्रह्माण इच्छध्वं स वै लोकेऽवदावदः॥ इति।

अन्नं ह प्राण शरणं ह वासो रूपं हिरण्यं पशवो विवाहाः। सखा ह जाया कृपणं ह दुहिता ज्योतिर्ह पुत्रः व्योमन्॥ इति।

पतिर्जायां प्रविशति गर्भो भूत्वा स मातरम्।

तस्यां पुनर्नवे भूत्वा दशमे मासि जायते।इति।

तज्ज्या जाया भवति यदस्यां जायते पुनः। आभूतिरेषा भूतिर्वीजमेतन्नधीयते॥ इति।

देवाश्चैतामृषयश्च तेजः समभरन्महत्। देवा मनुष्यानब्रूवन्नेषा वो जननी पुनः॥ इति।

टिप्पणी

नापुत्रस्य लोकोऽस्तीति तत्सर्वे पशवो विदु:। तस्मात् पुत्रो मातरं स्वसारं चाधरोहति॥ इति।

एष पन्था उरुगाय: सुशेवो यं पुत्रिण आक्रमन्ते विशोका:। तं पश्यन्ति पशवो, वयांसि च तस्मात्ते मात्रऽपि मिथुनी भवन्ति। इति हास्मा आख्याय॥

द्वितीयखण्ड:

अथैनमुवाच वरुणं राचानमुपधाव पुत्रे मे जायतां तेन त्वा यजा इति।

तथेति स वरुणं राजानमुपससार पुत्रे मे जायतां तेन त्वा यजा इति तथेति तस्य पुत्रे जज्ञे रोहितो नाम इति।

तं होवाचाजनि वै ते पुत्रे यजस्व मानेनेति स होवाच यदा वै पशुर्निर्दशो भवत्यथ स मेध्यो भवति निर्दशो न्वस्त्वथ त्वा यजा इति तथेति इति।

स ह निर्दश आस तं होवाच निर्दशो न्वभूद्यजस्व माऽनेनेति स होवाच यदा वै पशोर्दन्ता जायन्तेऽथ स मेध्यो भवति दन्ता न्वस्य जायन्तामथ त्वा यजा इति तथेति इति।

तस्य ह दन्ता जज्ञिरे तं होवाचाज्ञत वा अस्य दन्ता यजस्व माऽनेनेति स होवाच या वै पशोर्दन्ता: पद्यन्तेऽथ स मेध्यो भवति दन्ता न्वस्य पद्यन्तामथ त्वा यजा इति तथेति।

तस्य ह दन्ता पेदिरे तं होवाचापत्सत वा अस्य दन्ता यजस्व माऽनेनेति स होवाच यदा वै पशोर्दन्ता: पुनर्जायन्ते

अथ न मेध्यो भवति दन्ता न्वस्य पुनर्जायन्तामथ त्वा यजा इति तथेति।

तस्य ह दन्ता: पुनर्जज्ञिरे तं होवाचाज्ञत वा अस्य पुनर्दन्ता यजस्व माऽनेनेति स होवाच यदा वै क्षत्रिय: सांनाहुको भवत्यथ मेध्यो भवति संनाहं नु प्राप्नोत्वथ त्वा यजा इति तथेति।

स ह संनाहं प्रापत्तं होवाच संनाहं नु प्राप्नोद्यजस्व माऽनेनेति स तथेत्युक्त्वा पुत्रमामन्त्रयामास ततायं वै मह्यं त्वामददाद्धन्त त्वयाऽहमिमं यजा इति।

स ह नेत्युक्त्वा धनुरायारण्यमुपातस्थौ स संवत्सरमरण्ये चचार।

प्रथमखण्ड

12.1.1 व्याख्या

हरिश्चन्द्रः ह वैधस ऐक्ष्वाको राजाऽपुत्र आस तस्य ह शतं जाया वभूवुः तासु पुत्रं न लेभे तस्य ह पर्वतनारदौ गृह ऊषतुः स ह नारदं पप्रच्छ इति।

व्याख्या- हरिश्चन्द्र यह नाम 'प्रस्कण्वहरिश्चन्द्रावृषी' इस पाणिनीय सूत्र से राजर्षि है।और वे वेधस नृप के इक्ष्वाकुवंश में उत्पन्न पुत्रहीन राजा थे। उनके सौ पत्नियों में किसी से भी पुत्र प्राप्ति नहीं हुई। उस राजा के गृह में पर्वत और नारद नाम के दो ऋषि रहते थे। उनमें से राजा ने नारदऋषि को इस विषय में पूछा।

सरलार्थ- ईक्ष्वाकुवंशीय वेधस के पुत्र राजा हरिश्चन्द्र पुत्र विहीन थे। उनके सौ पत्नियाँ थी। परन्तु उनसे पुत्रलाभ नहीं हुआ। उनके गृह में पर्वत और नारद नाम के दो ऋषि थे। हरिश्चन्द्र ने उनमे से नारद को पूछा।

व्याकरण-

- आस- अस्-धातु लिट्-लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप।
- गाथया- गाथा सर्वैः गातुं योग्या गीतिः। तया इति।

यं न्विमं पुत्रमिच्छन्ति ये विजानन्ति ये च न। किं स्वित् पुत्रेण विन्दते तन्म आचक्ष नारदेति॥ इति।

व्याख्या- राजा नारद से प्रश्न करते है कि जो देव, मनुष्य आदि कुछ जानते हैं, वे विवेकज्ञानयुक्त है और जो पशु आदि कुछ नहीं जानते हैं, वे विवेकज्ञानरहित है। वे सब भी प्रिय पुत्र की कामना करते हैं। उस पुत्र से क्या चाहते है तथा उनका पिता कहलाने का प्रयोजन क्या है ? हे नारद मुझे उसका फल बताओ।

सरलार्थ-जो ज्ञानी और अज्ञानी है वे सब भी पुत्र की कामना करते हैं, उनको पुत्र से क्या लाभ है, मुझे बताओ।

टिप्पणी

व्याकरण-

- विजानन्ति -वि उपसर्गपूर्वक ज्ञा-धातु से लट्-लकार के प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप।
- विदन्ते- विद्-धातु से लट्-लकार प्रथमपुरुष के बहुवचन का रूप।

स एकया पृष्टो दशभिः प्रत्युवाच इति।

व्याख्या- नारद ने एक प्रश्न पूछने पर दश गाथा प्रत्युत्तर में कही।

सरलार्थः-नारद ने एक प्रश्न पूछने पर दश बातों से उत्तर समझाते है।

व्याकरण-

- पृष्टः - प्रच्छ-धातु से तप्रत्ययान्तरूप।
- उवाच- वच्-धातु से लिट्-लकार के प्रथमपुरुष एकवचन का रूप।

ऋणमस्मिन् संनयत्यमृतत्वं च गच्छति। पिता पुत्रस्य
जातस्य पश्येच्चेजीवतो मुखम्॥ इति।

व्याख्या- **पिता यदि** उत्पन्न हुए जीवित और सुखी पुत्र का मुख देखता है तो उसको ऐसे पुत्र में अपने लौकिक और वैदिक ऋण संकेतित होते हैं। लौकिक अवस्था मे पुत्र पौत्र दि को ऋण अर्पण कर देने चाहिए ,ऐसा स्मृतिकार कहते हैं। तीन वैदिक ऋण होते हैं, ऐसा विद्वान मानते हैं। पुत्रप्राप्ति से संपत्ति के नामकरण का कर्म सम्पादित होता है। और उस कर्म के विषय में वाणसनेय ने भी कहा है -'**अथातः संपत्तिर्यदा प्रैष्यन् मन्यते अथ पुत्रमाह त्वं ब्रह्म त्वं यज्ञस्त्वं लोक इति। स पुत्रः प्रत्याहाहं यज्ञोहं लोक इति।** ब्रह्म मेरा कर्तव्य है वेदाध्ययन मेरा अनुष्ठान है और पंचमहायज्ञ मेरे संपाद्य कर्म उत्तम लोक के लिए हैं। ये सब पुत्र तेरे द्वारा संपादनीय है। ये पिता के वाक्य का अर्थ है। ये सब मैं संपादित करूंगा, पुत्र वाक्य का अर्थ है ।। आरण्यक काण्ड में भी संक्षिप्त रूप से बताया गया है - **सोस्यायमात्मा पुणेभ्यः कर्मभ्यः प्रतिधीयते इति।** इस प्रकार सभी ऋण पुत्र को समर्पित करता है तभी तत्वज्ञान सम्पादन से अमृतत्व और मरण रहित मुक्तिपद को प्राप्त करता है पुत्र को अर्पित लौकिक और वैदिक भार प्राप्त होता है, समस्त विघ्नों से छुटकर।

सरलार्थ- पिता यदि उत्पन्न और जीवित पुत्र का मुख दर्शन करे और पुत्र को समस्त वैदिक और लौकिक ऋण प्रदान करे तो अमृतत्व को प्राप्त होता है।

व्याकरण-

- गच्छति- गम् धातु से लट्-लकार, प्रथमपुरुष एकवचन में रूप।
- पश्येत्- दृश्-धातु से विधिलिङ्-लकार, प्रथमपुरुष एकवचन में रूप।

शुनःशेपोपाख्यान-1

टिप्पणी

यावन्तः पृथिव्यां भोगा यावन्तो जातवेदसि। यावन्तो
अप्सु प्राणिनां भूयान् पुत्रे पितुस्ततः॥ इति।

व्याख्या- पृथिवी से भोग के रूप में सस्य निवास आदि है। जातवेदस् अग्नि से भोग के रूप में दहन पाचन आदि है। जल से स्नान पान आदि का भोग। प्राणियों के ये जितने भी भोग हैं, उन सब से बढ़कर एक पिता के लिए भोग पुत्र में विद्यमान होते हैं, क्योंकि वो अत्यन्त सुख का हेतु है। और भी कहा है -पुत्रोत्पत्ति और विपत्ति से अतिरिक्त कोई और सुख-दुःख नहीं है।

सरलार्थ-जैसे पृथिवी पर प्राणीजन में जो भोग उपलब्ध है, अग्नि और जल में जो भोग उपलब्ध है, वैसे ही पिता के लिए सर्वाधिक भोगपुत्र में ही विराजमान है।

व्याकरण-

- भोगाः - भोग ये पुंलिङ्ग, अकारान्त प्रातिपदिक का प्रथमा बहुवचन का रूप है। भोगाः अर्थात भोग्य विषय समूह।
- अप्सु- अप् इति स्त्रीलिङ्ग में नित्य बहुवचनान्त प्रातिपदिक के सप्तमी बहुवचन का रूप है।

शश्वत् पुत्रेण पितरोऽत्यायन् वहुलं तमः। आत्मा हि जज्ञे
आत्मनः स इरावत्यतितारिणी।इति।

व्याख्या- पिता उत्पन्न पुत्र के लिए सर्वदा दोनों लोक (इहलोक और परलोक) में बहुत अधिक दुःख सहन करता है। बौधायन ने कहा है - 'पुदिति नरकस्याख्या दुःखं च नरकं विदुः।' 'पुत्तस्तारणात्तत: पुत्रमिहेच्छन्ति परत्र च।' इति। और जिस कारण पिता से पुत्र उत्पन्न होने पर पिता स्वयमेव यज्ञ कहा जाता है फिर पिता जैसे स्वयं अपने दुःख विनाश करे वैसे ही पुत्र भी इन दुःख का विनाश करता है। वैसे ही वो पुत्र पृथ्वी पर अन्न के समान और नदी समुद्र आदि में नौका के समान है- जैसे नौका नद्यादि में दुर्घटना रहित यात्री को पार करवाती है, वैसे ही पुत्र भी इन लोकों के दुःखों से पार करवाता है।

सरलार्थः- पिता सर्वदा (इहलोक और परलोक में) पुत्र के लिए बहुत दुःख सहन करता है। जिससे आत्म रूप पितु के समीप पुत्र आत्मा की तरह जाता है। अतःएव पुत्र पिता के समीप दुःख, दुर्घटना आदि से बचने के लिए योग्य अन्न युक्त और उत्कृष्ट नौका तुल्य है।

व्याकरण-

- जज्ञे- जनी(प्रादुर्भावे) इस लिट्-लकार धातु से प्रथमपुरुष एकवचन का रूप।
- आत्मा- आत्मन् नकारान्तप्रातिपदिक का प्रथमा एकवचन का रूप।

टिप्पणी

किं नु मलं किमजिनं किमु श्मश्रुणि किं तपः। पुत्रं ब्रह्माण इच्छध्वं स वै लोकेऽवदावदः।इति।

व्याख्या- यहाँ मलाजिनश्मश्रुतपः शब्द से आश्रम चतुष्टय को कहा है। मलरूप शुक्ल और शोणित संयोग होने के कारण मलशब्द से गार्हस्थ्य को कहा है। कृष्ण अजिन संयोग से अजिन शब्द से ब्रह्मचर्य को कहा है।क्षौरकर्म से रहित होने से शाश्र शब्द से वानप्रस्थ को कहा है। मल को गार्हपत्य क्या नाम और क्या सुख नहीं करेगा।। हे ब्रह्माण! विद्वान विप्र क्षत्रिय आदि सभी तुम सब सुख के लिए पुत्र की कामना करो। ''स वै एव पुत्रोवदावदो लोकः। वदितुमयोग्यानि निन्दावाक्यान्यवदास्तैर्वाक्यैर्नोद्यन्ते न कथ्यन्ते इत्यवदावदः।'' अवदावदो दोष रहित अनिन्दा आदि को कहते हैं। ऐसे लोक का भोग हेतु पुत्र होता है। उन आश्रमों से अधिक पुत्र की इच्छा करनी चाहिए यद्यपि हरिश्चन्द्र ही यहाँ प्रष्टा है तथापि उनके साथ उनकी सभा में बहुत से ऋषि के होने से उनके लिए ब्रह्माण सम्बोधन है।

सरलार्थ- गार्हस्थ्य, ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ और पारिव्राज अर्थात सन्यास से क्या होगा ? इसलिए हे विप्रगणों, तुम पुत्र की कामना करो, पुत्र ही आनन्दनीय है।

व्याकरणम्

- इच्छध्वम्- इष्-धातु से मध्यमपुरुष के बहुवचन में वैदिक रूप।
- अवदावदः - वदितुम् अयोग्यानि निन्दावाक्यानि अवदाः। तैः वाक्यैः न उद्यते न कथ्यते इति अवदावदः।

अन्नं ह प्राण शरणं ह वासो रूपं हिरण्यं पशवो विवाहाः।
सखा ह जाया कृपणं ह दुहिता ज्योतिर्ह पुत्रः व्योमन्॥
इति।

व्याख्या- अन्नादि लोक में सुख के हेतु के रूप में प्रसिद्ध है। जैसे कि शरीर में प्राणों की अवस्थिति के कारण अन्न ही प्राण हैं। वस्त्र शीत आदि उपद्रव से रक्षक होने से गृह के समान है। सोने के कुंडल, कर्णाभरणादि दृष्टि को प्रिय होने से सौन्दर्य के संपादक हैं। विवाह होने से गो, अश्व आदि पशु हमारे निर्वाहक हैं (पत्नी भोग में सहकारी होने से सखा के समान या सखि स्वरूप हैं। इस प्रकार ये सुख के हेतु प्रसिद्ध होते हुए भी तात्कालिक और अल्प सुख को देने वाले हैं। दुहिता या पुत्र केवल दुःखकारी होने से दैन्य का हेतु है। और कहा भी है-

संभवे स्वजनदुःखकारिका संप्रदानसमयेऽऽर्थहारिका।
यौवनेऽपि बहुदोषकारिका दारिका हृदयदारिका पितुः। इति।

पुत्र तो ज्योति स्वरूप और तमो निवारक होने से वह ही पिता को परम व्योम उत्कृष्ट आकाश में परब्रह्म स्वरूप में विराजित करता है। 'आकाशस्तल्लिङ्गादित्यनेन पूर्वमेवामृतत्वं च गच्छतीत्यत्र प्रतिपादितम्।'

शुनःशेपोपाख्यान-1

टिप्पणी

सरलार्थः- अन्न ही प्राण है (प्राणधारण का सहायक), वस्त्र ही शरण है (आश्रय), हिरण्य ही रूप है (रूपोत्पादक), विवाह ही पशु लाभ का उपाय है। पत्नी सखि स्वरूप है, दुहिता या पुत्री दुःख का हेतु है परन्तु पुत्र ही उत्कृष्ट ऊर्ध्वलोक में ज्योति स्वरूप है।

व्याकरणम्-

- सखा- सखिन् प्रातिपदिक का प्रथमा एकवचन का रूप।
- दुहिता- दुहितृ प्रातिपदिक का प्रथमा एकवचनका रूप।

पतिर्जायां प्रविशति गर्भो भूत्वा स मातरम्।
तस्यां पुनर्नवे भूत्वा दशमे मासि जायते॥ इति।

व्याख्या- पति के दो आकार है। प्रथम वर्तमान पुरूषाकार और दूसरा रेतो रूप गर्भ में। जाया के भी दो आकार है। पतिरूप आकार जाया के लिए होता है। गर्भरूप आकार माता के लिए होता है। अतः स तादृशः पतिः स्वयं रेतोरूपेण गर्भो भूत्वा पूर्वमवस्थितां जायां भविष्यदाकारेण मातरं सतीं प्रविशति। तस्यां मातरि पुनर्नवो भूत्वा पूर्वमन्यस्यां मातर्युत्पन्नो जरठः। इदानीं पुनर्नूतनवालो भूत्वा तस्यामिदानीन्तन्यामस्यां मातरि गर्भ पाके सति दशमे मास्युत्पद्यन्ते तस्मात् पुत्रः स्वस्मादन्यो न भवति।

सरलार्थः- पति(रेतोरूप में) जाया में प्रवेश करता है, गर्भरूप से वह ही (भविष्यत्काल में विद्यमान) माता में प्रवेश करता है। और वो ही पुनः दशमास के भीतर उत्पन्न होता है।

व्याकरणम्-

- प्रविशति- प्र उपसर्ग पूर्वक विश्(प्रवेशने) अर्थक धातु से प्रथमपुरुष एकवचन में रूप।
- भूत्वा- भू- (सत्तायाम्) इत्यर्थक धातु कत्वाप्रत्ययान्तरूप।
- जायते- जनी(प्रादुर्भावे) इस धातु से प्रथमपुरुष एकवचन का रूप।

तज्ज्या जाया भवति यदस्यां जायते पुनः। आभूतिरेषा
भूतिर्वीजमेतन्नधीयते॥ इति।

व्याख्या- यदि इस कारण गर्भ धारीणी से पिता का पुत्र रूप में पुनर्जन्म होता है। इसी लिये लोक प्रसिद्ध जो जाया है वो 'जायतेऽस्यामिति व्युत्पत्ति' से जाया शब्द का वाचक होता है। और ये भूति अभूति शब्दों से जाने जाते हैं। भवत्यस्यांपुत्ररूपेण पतिरित्येषा भूतशब्दवाच्या रेतोरूपेणऽऽगत्यास्यां पुत्ररूपेण भवतीत्याभूतिशब्दवाच्या। एतदेतस्यां स्त्रियां बीजं रेतोरूपं निधीयते प्रक्षिप्यत् तस्मादुक्ताः शब्दा उपपद्यन्ते।

सरलार्थः- पति पत्नी से (पुत्र रूप में) पुनः उत्पन्न होता है। इसलिए पत्नी जाया (जाया इति आख्यां लभते) होती है। वो ही भूति और अभूति इन दो शब्दों द्वारा जानी जाती है। इसी में बीज स्थापित होता है।

व्याकरण-

- जायते- जनी(प्रादुर्भावे) इस धातु से प्रथमपुरुष के एकवचन का रूप।
- भवति- भू(सत्तायाम्) धातु से प्रथम पुरुष एकवचन का रूप।

देवाश्चैतामृषयश्च तेजः समभरन्महत्। देवा
मनुष्यानब्रूवन्नेषा वो जननी पुनः॥ इति।

व्याख्या- एतामेतस्यां योषिति देवाश्च महर्षयश्च स्वकीयं महत्तेजो रेतोरूपं सारं समभरन् पुत्रोत्पादनाय संपादितवन्तः। स्वयमेव संपाद्य ततो मनुष्यानित्यब्रूवन्। हे मनुष्या जायारूपेण वर्तते सेयं युष्माकं पुत्ररूपे जन्मनि जननी भवति।

सरलार्थः- देव और मनुष्यों ने इसी (पत्नी गर्भ में) महातेज की स्थापना की, देवों ने मनुष्यों के लिए कहा - हे मनुष्यों ये पुनः तुम्हारी जननी होगी।

व्याकरण-

- अब्रूवन्- ब्रूञ्-धातु लङ्-लकार, प्रथमपुरुष बहुवचन का रूप।

नापुत्रस्य लोकोऽस्तीति तत्सर्वे पशवो विदुः। तस्मात्
पुत्रो मातरं स्वसारं चाधरोहति॥ इति।

व्याख्या- लोको लोकजन्यं सुखपुत्रस्य नास्ति। नहि पुत्रदर्शनेन यत्सुखं तदन्यदर्शनेन क्वचिदपि दृश्यते इति यदस्ति तत्सर्वे गोमहिष्यादयो जानन्ति यस्मात्तस्मादेव कारणात् पशुजातौ जातः पुत्रो वत्सः स्वकीयां मातरं भगिनीं वा पुत्रोत्पादनार्थमधिरोहति।

सरलार्थ- अपुत्र का कोई भी लोक नहीं होता है- यह विषय सभी पशु जानते हैं। इस कारण (पशुओं में) पुत्र अपनी जननी या भगिनी (पुत्रोत्पादनाय) से मिलता है।

व्याकरण-

- अस्ति- अस्-धातु का लट्-लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन का रूप।
- अधिरोहति- अधि उपसर्ग पूर्वक रुह्-धातु से प्रथमपुरुष एकवचन में रूप।

एष पन्था उरुगायः सुशेवो यं पुत्रिण आक्रमन्ते
विशोकाः। तं पश्यन्ति पशवो, वयांसि च तस्मात्ते
मात्राऽपि मिथुनी भवन्ति॥ इति हास्मा आख्याय॥

व्याख्या- पुत्रिण पुत्रवन्तो देवमनुष्यादयो विशोकाः शोकरहिताः सन्तो यं पन्थानं सुखानुभवरूपं मार्गमाक्रमन्ते प्राप्नुवन्त्येष पन्थाः पुत्रसुखानुभवरूपो मार्ग उरुगाय उरुभिर्महद्भिः शास्त्रज्ञैः राजामात्यादिभिश्च गीयते। तथा सुशेव सुष्ठु सेवितुं योग्यः सुखाधिक्यस्य विद्यमानत्वात्। तं

पुत्रसुखानुभवरूपं पशवो गवादयो वयांसि पक्षिण: संपश्यन्ति जानन्ति। तस्मात्ते पशुपक्ष्यादय: पुत्रसुखार्थं मात्र सह मिथुनीभवन्ति किं किमुतान्यया स्त्रिया सहेत्यर्थ:।

इति (अनेन प्रकारेण) ह अस्मै (राज्ञे हरिश्चन्द्राय) आख्याय (अभिधाय) (स नारद: विरराम इति शेष:)।

सरलार्थ:- पुत्रवान् लोग शोक रहित होकर जिस मार्ग को स्वीकार करते है वो ही मार्ग सब लोगों द्वारा प्रशंसनीय है और अच्छी प्रकार सेवन करने योग्य है। पशु और पक्षि इस विषय में जानते है। इसीलिये वे अपनी माता से मिलते है। नारद ऋषि ने हरिश्चन्द्र को ये सब कहा।

व्याकरण-

- पश्यन्ति- दृश्-धातु से लट्-लकार, प्रथमपुरुष, बहुवचन का रूप।
- भवन्ति- भू-धातु से लट्-लकार, प्रथमपुरुष, बहुवचन का रूप।
- आक्रमते- आङ् उपसर्ग पूर्वक क्रमु-धातु से प्रथमपुरुष, एकवचन का रूप।

पाठगत प्रश्न

40. हरिश्चन्द्र किसके पुत्र थे ?
41. हरिश्चन्द्र का पुत्र था अथवा नहीं?
42. हरिश्चन्द्र की कितनी पत्नियां थी?
43. हरिश्चन्द्र के गृह में कौन ऋषि थे ?
44. उन ऋषियों में किस ऋषि से हरिश्चन्द्र ने पुछा ?
45. नारद ने कितनी गाथाओं में उत्तर दिया ?
46. पिता के पास किसमें सर्वाधिक भोग होता है ?
47. प्राणतुल्य कौन है ?
48. शरण क्या है ?
49. भूति और आभूति ये दो शब्द किसके वाचक है ?

द्वितीयखण्ड

12.1.2 इदानींमूलपाठम्अवगच्छाम

अथैनमुवाच वरुणं राचानमुपधाव पुत्रे मे जायतां तेन त्वा यजा इति।

टिप्पणी

व्याख्या- पुत्र के लाभ का प्रतिपादन एवं नारद उपर्युक्त दश गाथा कहकर अब पुत्र जन्म के उपाय का उपदेश वाक्य यहाँ प्रस्तुत है -

अथ पुत्रेच्छानिमित्तकथनानन्तरमेनं पुत्रार्थिनं हरिशचन्द्रं नारद उवाच। हे हरिशचन्द्र वरुणं राजानमुपधार प्रार्थयस्व। येन प्रकारेण निश्चयः सोऽभिधीयते। हे वरुण त्वत्प्रसादान्मे पुत्रे जायतां ततस्तेन पुत्रेण त्वां यजै त्वामुद्दिश्य यज्ञं करवाणीति।

सरलार्थ-उसके बाद नारद ने हरिश्चन्द्र को कहा -आप वरुण राजा से प्रार्थना करो कि मुझे पुत्र प्राप्ति हो जाये। उससे (पुत्र से) मैं तुम्हारे लिए याग करूंगा।

व्याकरण-

- उवाच - वच्-धातु लिट्-लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन का रूप।
- जायताम्- जनी (प्रादुर्भावे) धातु से लोट्-लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन का रूप।

तथेति स वरुणं राजानमुपससार पुत्रे मे जायतां तेन
त्वा यजा इति तथेति तस्य पुत्रे जज्ञे रोहितो नाम इति।

व्याख्या- नारदोपदेश को स्वीकार किया हरिशचन्द्र वरुण को प्रसन्न करने के लिए प्रार्थना करता है। वरुण भी उसको पुत्र के लिए वर देते हैं- तथाऽस्तु। और उस वरुण के प्रसाद स्वरूप उत्पन्न पुत्र का नाम ही रोहित था।

सरलार्थ - वैसे ही करूंगा। ऐसा कहकर राजा हरिश्चन्द्र ने वरुण से प्रार्थना की कि- मेरे पुत्र हो जाए, उससे तेरा याग करूंगा। (वरुण ने कहा) तथैव भवतु। बाद में हरिश्चन्द्र के रोहित नामक एक पुत्र रत्न का जन्म हुआ।

व्याकरणम्-

- जायताम्- जनी (प्रादुर्भावे) धातु से लोट्-लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन का रूप।
- जज्ञे- जनी(प्रादुर्भावे) धातु से लिट्-लकार, प्रथमपुरुष, एकवचन का रूप।

तं होवाचाजनि वै ते पुत्रे यजस्व मानेनेति स होवाच
यदा वै पशुर्निर्दशो भवत्यथ स मेध्यो भवति निर्दशो
न्वस्त्वथ त्वा यजा इति तथेति इति।

व्याख्या- इस प्रकार अनेक प्रकार से वरुण का कथन और हरिशचन्द्र का प्रतिकथन दोनों का प्रति पादन करते है। प्रथम रूप इसप्रकार है -

प्रकार हरिशचन्द्र ने उस वरुण को कहा। हे हरिशचन्द्र तेरे पुत्रउत्पन्न होने पर उस पुत्र से मेरे लिए याग करो। इसप्रकार वरुण के कहने पर हरिशचन्द्र ने पुनः कहा। याग के लिए जैसे पशु

शुनःशेपोपाख्यान-1

टिप्पणी

निर्देश है वैसा ही वह पशुर्मेध याग के योग्य है। निर्गतान्यशौचदिनानि दशसंख्याकानि यस्मात् पशोः सोऽयं निर्देशः। तस्मादयं नु क्षिप्रं निर्देशोऽस्तु। अथानन्तरं त्वा प्रत्यहं यजा इत्यतद्वाक्यं वरुणस्तथाऽस्त्वित्यङ्गीचकार।

सरलार्थः- (बाद में) वरुण ने हरिश्चन्द्र को कहा -तेरे पुत्र हुआ है उससे मेरे लिए याग करो। हरिश्चन्द्र ने कहा - (जन्म के बाद) दशदिन बाद में ही पशुमेध्ययाग होता है। अतः शीघ्र दश दिन हो, उसके बाद तेरे लिए याग करूंगा। वरुण ने कहा - वैसा ही हो।

व्याकरण-

- उवाच- वच- धातु लिट्-लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप।
- भवति- भू (सत्तायाम्) धातु से लट्-लकार प्रथमपुरुष एकवचन का रूप।

स ह निर्दश आस तं होवाच निर्दशो न्वभूद्यजस्व माऽनेनेति स होवाच यदा वै पशोर्दन्ता जायन्तेऽथ स मेध्यो भवति दन्ता न्वस्य जायन्तामथ त्वा यजा इति तथेति इति।

व्याख्या- दशदिनाशौचापगमे शुद्धत्वाद्यथा यागयोग्यत्वं तथा दन्तोत्पन्नत्वादयवसंपूर्त्या यागयोग्यत्वमित्यभिप्रायः। स्पष्टमन्यत्।

सरलार्थ-उस रोहित के दश दिन समाप्त हो जाने पर वरुण ने हरिश्चन्द्र को कहा - दश दिन हो चुके है, अब तुम याग करो। हरिश्चन्द्र ने कहा -जब पशुदन्त वाला होता है तब वह मेध्य होता है। इसके दांत आ जाए तब हम याग करेंगे। वरुण ने कहा -तथैवास्तु।

व्याकरण-

- जायन्ते- जनी(प्रादुर्भावे) धातु से लट्-लकार प्रथम पुरुष बहुवचन में रूप।
- भवति- भू(सत्तायाम्) धातु से लट्-लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप।
- जायन्ताम्- जनी(प्रादुर्भावे) धातु से लोट्-लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप।
- उवाच- वच्- धातु से लिट्-लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप।

तस्य ह दन्ता जज्ञिरे तं होवाचाज्ञत वा अस्य दन्ता यजस्व माऽनेनेति स होवाच या वै पशोर्दन्ताः पद्यन्तेऽथ स मेध्यो भवति दन्ता न्वस्य पद्यन्तामथ त्वा यजा इति तथेति।

व्याख्या-अज्ञत वै जाता एव। पद्यन्ते पतन्ति। प्रथमोत्पान्नानां दन्तानमस्थायित्वेन मुख्यप श्व्वयवत्वाभावात्तात्पाते सति पशोर्मेध्यत्वम्।

टिप्पणी

सरलार्थः-उसके बाद उसके दांत आ गये। वरुण ने हरिश्चन्द्र को कहा -इसके दांत आ गये अब तो मेरे लिए इससे याग करो। हरिश्चन्द्र ने कहा -जब पशु के दन्त गिरते है तब वो मेध्य अर्थात यज्ञ में बलि के योग्य होता है, इसके दांत गिरने दो तब तुम्हारे लिए इससे याग करूंगा। (वरुण ने कहा -तथैवास्तु)।

व्याकरण-

- उवाच- वच्- धातु से लिट्-लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप।
- जज्ञिरे- जनी इस धातु से लिट्-लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप।
- पद्यन्ते - पद-गतौ धातु से लट्-लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप।
- पद्यन्ताम्- पद-गतौधातु से लोट्-लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप।

तस्य ह दन्ता पेदिरे तं होवाचापत्सत वा अस्य दन्ता
यजस्व माऽनेनेति स होवाच यदा वै पशोर्दन्ताः पुनर्जायन्ते
पुद्यन्तेऽथ
अथ न मेध्यो भवति दन्ता न्वस्य पुनर्जायन्तामथ त्वा
यजा इति तथेति।

व्याख्या-अपत्सत वै पतिताः। पुनरुत्पन्नानां दन्तानां स्थिरत्वेन संपूर्णावयवत्वात् पशोर्मेध्यत्वम्।

सरलार्थः-अब उस रोहित के दांत गिर चुके थे - वरुण ने हरिश्चन्द्र को कहा इसके दन्त गिर चुके है अब तो इससे मेरे लिए याग करो। तब हरिश्चन्द्र ने कहा जब पशु के दांत पुनः उत्पन्न हो जाए तब वो मेध्य होता है। अतः इसके दन्त पुनः उत्पन्न हो जाए तब तेरे लिए याग करूंगा। वरुण ने कहा -तथैवास्तु।

व्याकरण-

- जायन्ताम् -जनी प्रादुर्भावे धातु से लोट्-लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप।
- भवति- भू(सत्तायाम्) धातु से लट्-लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप।
- जायन्ताम्- जनी(प्रादुर्भावे) धातु से लोट्-लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप।

तस्य ह दन्ताः पुनर्जज्ञिरे तं होवाचाज्ञत वा अस्य
पुनर्दन्ता यजस्व माऽनेनेति स होवाच यदा वै क्षत्रियः
सांनाहुको भवत्यथ मेध्यो भवति संनाहं नु प्राप्नोत्वथ
त्वा यजा इति तथेति।

व्याख्या-अज्ञात वै जाता एव। पश्वन्तरस्य पुनर्दन्तोत्पत्तिक्रमेण मेध्यत्वेऽप्यस्य पशोः क्षत्रियत्वात् स्वजात्युचितधनुर्वाणकवचादिलसहनाहशीलित्वे सति जात्युचितव्यापारसंपूर्तौ मेधात्वम्। तस्मान्नु

शुनःशेपोपाख्यान-1

टिप्पणी

क्षिप्रमेवासौ संनाहं प्राप्तोत्वन्तरमेव यजा इत्युत्तरं वरुणोऽङ्गीचकार।

सरलार्थः-उस रोहित के दन्त पुनः उत्पन्न हो गये। वरुण ने हरिश्चन्द्र को कहा -इसके दन्त पुनः उत्पन्न हो गये। अब इससे मेरे लिए याग करो। हरिश्चन्द्र ने कहा -क्षत्रिय जब सन्नाहुक अर्थात् धनुष बाण कवच आदि पर अधिकार कर ले तब वो मेध्य होता है। मेरा पुत्र सन्नाहुक हो जाए तब तेरे लिए याग करूंगा। वरुण ने कहा-तथैवास्तु।

व्याकरण-

- उवाच- वच्- धातु से लिट्-लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप।
- जज्ञिरे- जनी धातु से लिट्-लकार प्रथम पुरुष बहुवचन का रूप।
- प्राप्नोति- प्र उपसर्गपूर्वक आप्-धातु से लट्-लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप।

स ह संनाहं प्रापत्तं होवाच संनाहं नु प्राप्नोद्यजस्व माऽनेनेति स तथेत्युक्त्वा पुत्रमामन्त्रयामास ततायं वै मह्यं त्वामददाद्धन्त त्वयाऽहमिमं यजा इति।

व्याख्या- संनाहप्राप्तोरुर्द्धं स हरिशचन्द्रो वरुणोक्तिमङ्गीकृत्य पुत्रमामन्त्र्यैवमुवाच। उपलालनार्थं पुत्रे पिततृवाचितशब्दप्रयोगः। हे तात हे पुत्रय एव वरुणो मह्यं त्वां पुत्रवरेण दत्तवान्। हन्त दुष्टोऽहमिमं वरुणं यत्त्वया पुत्रेण यजै यागरूपां करवाणीति हरिशचन्द्रस्योक्तिः।

सरलार्थः-उसके बाद वह बालक सन्नाहुक हो गया। तब वरुण ने हरिश्चन्द्र को कहा - ये अब सन्नाहुक हो गया। अतः अब इससे मेरे लिए याग करो। राजा हरिश्चन्द्र ने कहा -तथैव भवतु अर्थात वैसा ही हो। ऐसा कहकर पुत्र को बुलाकर बोले -वत्स!ये वरुणदेव है जिन्होंने तुझे मुझको प्रदान किया है। अब तुझसे वरुण के लिए याग करना है।

व्याकरणम्-

- उवाच- वच्- धातु लिट्-लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप।
- प्राप्नोति- प्र उपसर्ग पूर्वक आप्-धातु से लट्-लकार प्रथमपुरुषएकवचन का रूप।
- यजस्व - यज् इत्यर्थक लोट्-लकार मध्यम पुरुष एकवचन का रूप।

स ह नेत्युक्त्वा धनुरायारण्यमुपातस्थौ स संवत्सरमरण्ये चचार।

व्याख्या-स ह स खलु रोहिताख्यः पुत्रः पितृवाक्यं निषिध्य स्वरक्षणार्थं धनुः स्वीकृत्याहरणं प्रत्युपगतोऽभूत्। कलस्मश्चिदरण्यो नैरन्तर्येन स रोहितः संवत्सरं चचारेति।

सरलार्थः-ऐसा कभी नहीं होगा, ऐसा कहकर वो रोहित धनुष उठाकर वन को चला गया। और फिर एकवत्सर तक वह अरण्य में घूमता रहा।

व्याकरण-

- चचार - चर-धातु से लिट्-लकार प्रथम पुरुष एकवचन का रूप।
- उक्त्वा - वद्-धातु से क्त्वा प्रत्ययान्त रूप।

पाठगत प्रश्न

50. इस पाठ में किसकी कथा वर्णित है ?
51. हरिश्चन्द्र ने राजा वरुण से क्या प्रार्थना की ?
52. हरिश्चन्द्र ने किसके लिए याग किया ?
53. पशु मेध्य याग का कब अनुष्ठान किया जाता है ?
54. कैसे पशु पशु मेध्य याग के योग्य होता है ?
55. हरिश्चन्द्र को किसने कहा कि अब इसके दन्त आ गये।
56. कौन धनुष लेकर अरण्य में चला गया ?
57. सन्नाहुक: का क्या अर्थ है ?
58. हरिश्चन्द्र ने अपने गृह में ठहरे हुए नारदर्षि को क्या पूछते है ?
59. हरिश्चन्द्र किसको प्रत्युत्तर देते है ?

पाठसार

इस पाठ में एक उपाख्यान है।जिसमे शुन:शेपोपाख्यान में हरिश्चन्द्र कथा वर्णित है। हरिश्चन्द्र की यद्यपि सौ पत्नियां थी फिर भी किसी के भी पुत्र नहीं था। तब वो अपने घर में रहने वाले नारदर्षि को पूछा। उन्होंने दश गाथा में प्रत्युत्तर दिया। उन्होंने विविध प्रकार से पुत्र का माहात्म्य बताते है। इस प्रकार सभी मन्त्रो से स्पष्ट है कि पुत्र सर्वाधिकभाग्य का विषय है पिता के लिए निकट होने से।

पाठांत प्रश्न

60. शुन: शेपोपाख्यान का सार लिखो ?

शुन:शेपोपाख्यान-1

61. हरिश्चन्द्रो ह वैधस... इस शुन:शेपोपाख्यान अंश का सायणभाष्य के अनुसार व्याख्या करो।

62. अन्नं ह प्राण:... इस शुन:शेपोपाख्यान अंश सायणभाष्य के अनुसार व्याख्या करो।

63. पतिर्जायां प्रविशति... इस शुन:शेपोपाख्यान अंश सायणभाष्य अनुसार व्याख्याकरो।

64. नापुत्रस्य... इस शुन:शेपोपाख्यान अंश सायणभाष्य अनुसार व्याख्या करो।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

उत्तरकूट-1

65. वेधस।

66. आम्।

67. सौ।

68. पर्वत और नारद।

69. नारद।

70. दश से।

71. पुत्र में।

72. अन्न।

73. वस्त्र।

74. पत्नी।

उत्तरकूट-2

75. हरिश्चन्द्र के।

76. मेरे पुत्र हो जाए।

77. वरुण को।

78. जन्म के बाद दशदिन व्यतीत हो जाने पर।

79. याग के लिए पशु का जैसा निर्देश होता है तब वह पशुर्मेध्य याग योग्य होता है।

टिप्पणी

80. वरुण।

81. रोहित।

82. कवच परिधान अर्थात धारण करने योग्य पुरुष।

83. सौ पत्नियां होने पर भी उसके कोई पुत्र नहीं था।

84. दश से।

बारहवां पाठ समाप्त